

nis. Bñh. S. 17, 18. — 2) *bestreuen, überziehen mit, oder intrans. bestreut* —, *überzogen sein mit*; nur part. praet.: रजसा धस्तमासीनम् *in Staub gehüllt* MBh. 10, 662. रजसा धस्तं भैत्यम् 13, 4821. 4823. R. 2, 58, 3. 72, 31 (Gorr. 74, 32). 91, 63 (Gorr. 100, 61). R. Gorr. 2, 112, 27. पांशुधस्त-शिरोरुक्ता MBh. 3, 2514. 4, 1048. 7, 2519. HARIV. 13818. R. 5, 21, 5. 6, 9, 3. रेणुधस्तमिवान्वरम् HARIV. 10911. रजोधस्ता तारेव गगनच्युता R. 2, 65, 23. पांशुधस्ता (संध्या) VARĀH. Bñh. S. 46, 27 (28). (दिवसाः) किमधस्ताः R. 3, 22, 11.

— caus. 1) धंसयति *füllen, niederreißen; vernichten, zu Grunde richten*: तेन मूर्धनमदधंसवत्प्रद्विषः BHATT. 15, 94. धंसयेयुर्मधुवनम् R. 5, 63, 23. अर्धसयाव चामुनैवार्यपतिभवनम् DAÇAK. in BENF. Chr. 188, 13. unterbrechen (eine Rede): धंसयित्वा तु तदाकथम् R. 2, 60, 15. — 2) धंसयति *spritzen, sprühen*: प्राचाजिह्वं धंसयत् तपुच्युतम् RV. 1, 140, 3. अर्दस्य ते धंसयन्ति वथैरते कृष्णभुम् मङ्गि वर्पः करिःक्रतः 5.

— intens. दनीधस्यते, दनीधंसोति P. 7, 4, 84. 6, 4, 24. Sch. Vop. 20, 7.

— अति *abschütteln(?)*: श्यावीरतिधंसपृथः VĀLAKE. 6, 5.

— अय 1) *sich scheeren, sich packen*. अयधंसति वक्रशो वदन्क्रोधसमन्वितः HARIV. 720. — 2) अयधस्त *bestäubt*: अयधस्तैर्वस्तिवर्णैरिव TAITT. Ār. 1, 4, 4. — 3) Jmd *sich scheeren heissen*: न चाप्यन्यसपधंसैत्कदाचित्कोपसंयुतः MBh. 1, 5596. — Vgl. अयधंस *fgg.* und अयधस्त (bedeutet wohl so v. a. *verstossen, ausgestossen aus der Gesellschaft*). — caus. *abstäuben, wegblasen*: पांशूनयधंसयतः Schol. zu TBh. I, p. 6, 9.

— अयि *befallen, heimsuchen*: पुत्राधिभिर्भिधस्ता MBh. 5, 3230. — caus. *bestäuben*: विशो ऽभिवातमभिधंसयन्परीयात् KĀTH. 11, 6. यदभिधंसयेत् (पात्राणि) 27, 8.

— अय 1) *sich ansetzen an, sich legen auf*: धातं तमो ऽयं दधसे कृते RV. 10, 113, 7. — 2) *bestreuen*: चूर्णैर्वधंसते SIDDH. K. zu P. 3, 1, 25. Vop. 21, 17. — Vgl. अयधंस, अयधस्त. — caus. *bestreuen*: चूर्णैर्वधंसयति P. 3, 1, 25, Sch.

— आ, part. आधस्त *überzogen, bedeckt*: चतुस् Nir. 4, 3.

— उद् s. उद्धुस. — caus. *überziehen*: ब्राह्मणास्य गवां राजन्क्रियतीनां रजः पुरा । सोममुद्धुसयामास MBh. 13, 4817.

— समुद्, part. समुद्धुस्त *überzogen*: रेणु° R. 2, 42, 10.

— उप, pass. *befallen* —, *heimgesucht werden*: कृत्यापिशावरत्नक्रोधाधर्मैरुपधस्यते जनपदाः Suçr. 1, 21, 11. — Vgl. उपधस्त.

— नि caus. in der dunklen Stelle: सनामाना चिद्धस्यो न्यस्मा अवा-कृन्विन्द्र उषसो ययानः RV. 10, 73, 6.

— विनि, partic. °धस्त *zerstört, zu Grunde gerichtet*: भूमौ वाणैर्विनिधस्ता पतितौ ज्यामेवायुधात् R. Gorr. 2, 125, 13.

— परि, partic. °धस्त 1) *zerstört, zu Grunde gerichtet*: °धस्ताजिराणि (वेष्मानि) R. 2, 33, 18. (पृथिवी) °विशीर्णशैला 6, 3, 51. भिन्नमुष्टिपरि° (कार्मुक) 20, 28. °प्रभाजाल (दिवाकर) 3, 58, 41. — 2) *überzogen, bedeckt mit*: रेणु° R. Gorr. 2, 41, 11. 58, 3. — Vgl. परिधंस.

— प्र *zerfallen, zu Grunde gehen*: प्रधंसते KĀND. Up. 8, 1, 4. *sich zerstreuen*: यत्र सर्वत आपः प्रधंसेरन् (besser die v. l. प्रस्यन्देरन्) ĀÇV. Gñh. 4, 1. प्रधस्त *verschwunden, zu Grunde gegangen, zerstört*: प्रधस्ता वा तरुभ्यः सरसफलभृता वत्कलिन्यश्च शाखाः BHART. 3, 26. °चत्वरपथा (अयोध्या) R. Gorr. 2, 68, 53. भूमिः °संकाशा निर्वृता शुष्ककानना MBh. 5,

338. स्वभावमायागुणभेदमोहैः Bhāg. P. 9, 8, 23. — caus. 1) *fallen machen, zu Fall bringen, zu Grunde richten, zerstören*: शिरः प्रधंसयामास वत्स्याक्रम्य कुञ्जरः MBh. 7, 1387. सकृदिन्नं त्वया व्यूहं तत्र तत्र वयं पुनः । वयं प्रधंसयिष्यामो निघ्नमाना वरान्वरान् ॥ 1529. प्रधंसितान्ध-तमस (रवि) Çig. 2, 33. — 2) *ausstreuen, zerstreuen*: सिकता प्रधंसयति Çat. Br. 7, 3, 4, 23. पाणिना प्रधंस्य 4, 1, 4, 28.

— प्रति, partic. °धस्त *niedergeschlagen*: °मुख MBh. 12, 3606. *im Stich gelassen(?)*: प्रतिधस्तोद्भूतस्य न्यस्तसर्वायुधस्य च 3717.

— वि *zerstieben, auseinanderfahren*: यथाश्मानमृवा लोष्टो विधंसैतेवै वैव विधंसमाना विधंसो विनेषुः Çat. Br. 14, 4, 1, 8. KĀND. Up. 1, 2, 7 (wo neben dem med. auch *विदधंसुः*). 8. MBh. 12, 7978. एतच्छ्रुत्वा तु भीष्मस्य राज्ञो विधंसिरे (sic) तदा । काञ्चनाङ्गदिनः पीना भुजाः MBh. 5, 5877. विधस्त *auseinandergefallen, zu Grunde gegangen, zerstört, vernichtet*: (पद्मिनी) विधस्तपर्णाकमला MBh. 3, 2668. °कवचा (चम्) R. 2, 114, 6. 6, 22, 26. पद्मिनीमिव विधस्ताम् 5, 21, 12. पर्वतान् R. SchL. 2, 69, 12. °शयनासन (सम्भन्) R. Gorr. 2, 67, 22. °विपणापणा (अयोध्या) 85, 24. °नगराश्रमा (वसुधा) MBh. 1, 7675. 3, 12258. R. 2, 113, 24. 5, 51, 1. DAÇAK. in BENF. Chr. 201, 13. किरणाः VARĀH. Bñh. S. 29, 9. °बन्धन Bhāg. P. 9, 7, 25. °परगुण VĀSAVAD. 6. *aufgewirbelt*: तुरगखुर° (रजस्) R. 6, 10, 12. in der Astr. *verfinstert* SÜRJAS. 7, 21, 22. Die Bed. von *विधस्त* in der verdorbenen Stelle PĀNĀT. II, 121 vermögen wir nicht zu bestimmen. — caus. *zerstieben machen, zerschmettern, auseinanderreiben; zu Grunde richten, verwüsten, vernichten*: शरैर्विधंसयामास गिरेः शृङ्गे सकृन्धया MBh. 1, 8282. R. 3, 68, 44. विधंसितार्थ 72, 18. 6, 28, 12. रथं रिपोः । विधंसयितुमिच्छामि वायुर्मधमिवोत्थितम् 90, 6. दशध्रीवसैन्यम् — दुमैर्विधंसयो चक्रुः MBh. 3, 16501. 1, 4455. 4, 1665. पाण्डवानामनीकिनीम् । शरैर्विधंसयति वै नलिनीमिव कुञ्जरः ॥ 8, 3003. R. 5, 29, 29. विधंस्य त्रिदशान् R. Gorr. 1, 68, 9 (dagegen *विधंस्य* R. SchL. 66, 9. MBh. 1, 7765). विधंसयेत्पुरो लङ्काम् 5, 26, 37. 6, 1, 34. PĀNĀT. ed. orn. 53, 14. MĀRK. P. 20, 43. BHATT. 12, 23. (कृतातः) विश्वं विधंसयन्वोर्यशौर्यविस्फूर्जितध्रुवा Bhāg. P. 4, 24, 56. ईशविधंसिताशिषाम् 22, 36. Jmd *ein Leid anthun*: पो रामस्य प्रिया भार्या विधंसयितुमिच्छति R. 3, 53, 51.

— प्रवि, partic. °धस्त *abgeworfen*: °शरासनौ R. 6, 22, 26. *geworfen*: वात°तरंगसंकुलो यथार्णवः HARIV. 10627.

धंस(von धंस्) 1) m. *das Zerfallen, Verfall, das zu-Grunde-Gehen, zu-Nichte-Werden, Verschwinden, Aufhören, Untergang*; = अत्यय Schol. zu P. 2, 1, 6. VARĀH. Bñh. S. 3, 59, 71. याति धंसं सर्वलोकः 46, 10 (11). धुवं धंसो भावी जलनिधिमक्षीशैलसरिताम् PRAB. 82, 14. उदयधंसादियुक्तं जगत् 112, 4. तत्तूनां पद्मपां लोमो स्याद्धुसश्च विषाश्रयात् KĀM. Nitis. 7, 23. रिपु° Çat. 14, 163. बन्ध° KAP. 1, 87. धैर्य° BHART. Suppl. 17. PĀNĀT. I, 117. कल्मषधंसकारिन् ad Hit. I, 17. Verz. d. Oxf. H. 166, b, ÇI. 21. कार्य° Vereitelung einer Angelegenheit GUPT. Nitis. 16 in HARB. Anth. 506. COLEBR. Misc. Ess. I, 288. — 2) f. ई = त्रसेरेण 1: जालात्तरगते सूर्यकरे धंसो (von धंसिन्?) विलोक्यते VAIDJAKAPAR. im ÇKDB.

धंसक (wie eben) adj. am Ende eines comp. *zu Grunde richtend, vernichtend, vertreibend*: दत्ताधर° Bein. Çiva's H. 200, Sch. प्रलयावस्था° MEDHĀT. und GOVINDAN. bei KULL. zu M. 1, 6. मदात्यय° Verz. d. B. H. No. 934.